

18/08/2017

प्रवाह



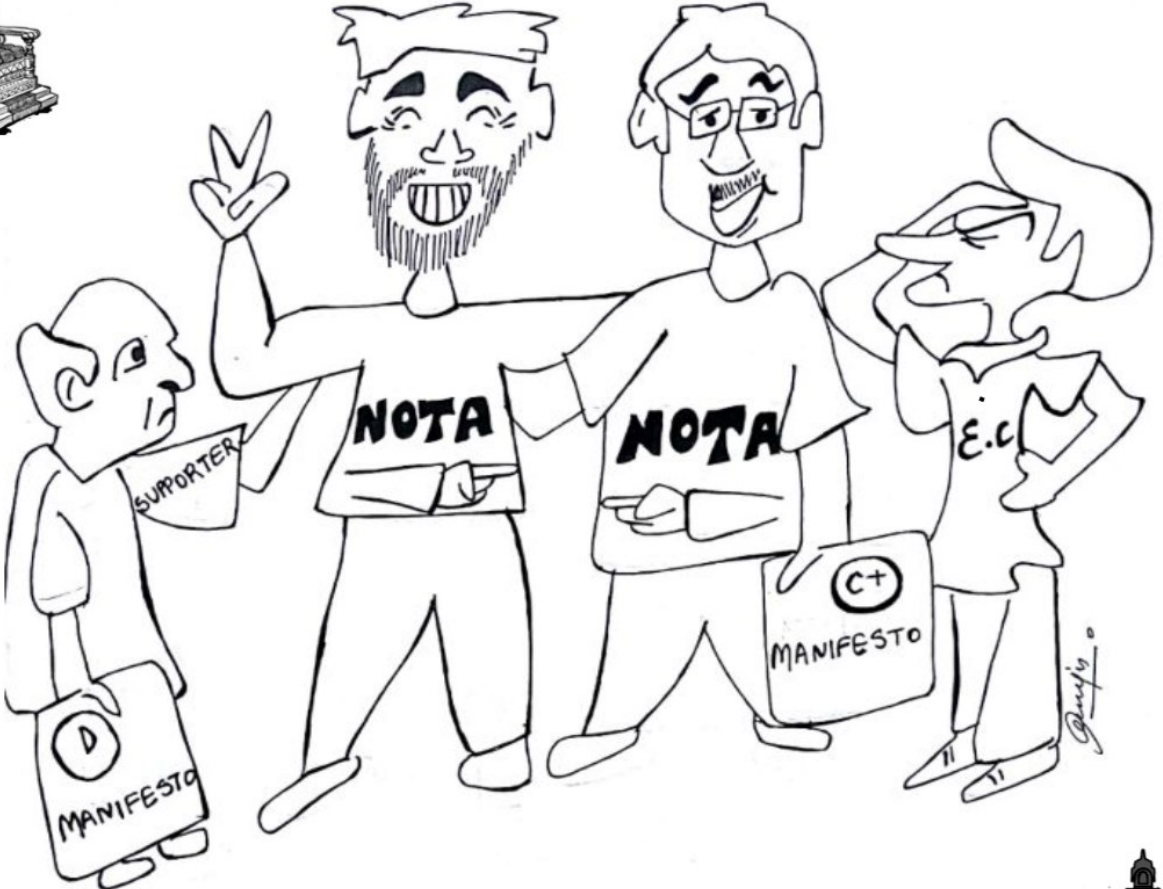
हिन्दी प्रेस क्लब

चुनाव विशेषांक सत्र 1 अंक 2

71वाँ स्वतंत्रता
पृष्ठ 7 दिवस

एच.डी.सी
निष्काषित
पृष्ठ 8

चुनावी पृष्ठ 4-5
उम्मीदवार



Disclaimer : प्रस्तुत कार्टून किसी भी व्यक्ति-विशेष से सम्बंधित नहीं है।

इसे केवल मनोरंजन के दृष्टि से देखा जाए।





**"किसी विरोधी के न होने से दोनों उम्मीदवारों ने अपनी जीत लगभग तय मान-सी ली है।
नोटा तो खैर अपना प्रचार नहीं कर सकता।"**

प्रजातंत्र यानि 'डेमॉक्रसी' की शुरुआत यूनान में कुछ 2500 वर्ष पहले हुई थी। हालांकि तब सभी को बराबरी के अधिकार नहीं थे और वोट देने का अधिकार भी कुछ गिने चुने लोगों के पास ही था पर सबसे महात्त्वपूर्ण बात यहाँ यह थी की कुछ निर्णय 'वोट' के आधार पर लिए जाने लगे। अब उस देश की कमान सिर्फ एक राजा के हाथ में नहीं बल्कि एक बड़े समूह के हाथ में थी और उन्हें अपने विचारों को प्रकट करने का ज़रिया दिया उनके 'वोट' ने। प्रजातंत्र का आगमन मानव इतिहास में उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना की आग का या पहिये का आविष्कार और इसे उसी सम्मान से देखा भी जाना चाहिए।

भारत में प्रजातंत्र कुछ देर से आया, परंतु भारत में प्रजातंत्र ने अपने सभी पुराने रूपों से सीखकर कदम रखा। आज़ादी के बाद से ही भारत को प्रजातंत्र घोषित कर दिया गया और पहले चुनावों से ही सभी को वोट का समान अधिकार दिया गया। ऐसा इतिहास में कम ही हुआ है कि किसी खास वर्ग को वोट देने के अधिकार के लिए संघर्ष न करना पड़ा हो। पहले चुनावों से अब तक बहुत कुछ बदला है – वोट देने वाले, वोट मांगने वाले, पर जो अडिग रहा है वह है भारत और भारतवासियों को प्रजातंत्र पर विश्वास।

हाल ही में देश-दुनिया में कई चुनाव हुए व होने को हैं – भारत में राज्य सभा, राष्ट्रपति व उप-राष्ट्रपति के चुनाव, फ्रांस के राष्ट्रपति के चुनाव, जर्मनी कुलाधिपति के चुनाव, पिछले वर्ष अमरीका में हुए राष्ट्रपति चुनाव इत्यादि। मगर हमें इन चुनावों में अभी दिलचस्पी नहीं है। बिट्स पिलानी के परिपेक्ष में इनसे बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण चुनाव होने जा रहे हैं - बिट्स पिलानी के अध्यक्ष और जनरल सेक्रेटरी सहित पूरे छात्र संघ के चुनाव। मगर शायद इस वर्ष के ये चुनाव कुछ अलग होंगे और इसका कारण यह है कि अध्यक्ष और जनरल सेक्रेटरी के पद के लिए सिर्फ एक-एक उम्मीदवार मैदान में उतरा है।

मैंने बिट्स के पिछले दो वर्षों के चुनावों को नज़दीक से देखा है और दोनों बार माहौल बहुत रोचक रहा है। मेरे प्रथम वर्ष में जहां चुनाव आयोग पर ही उँगलियाँ उठी थीं तो पिछले वर्ष चुनाव से एक दिन पहले भवनों में एक पर्चे के लग जाने से पूरे चुनाव का गणित बिगड़ गया था। कैम्पस इस समय चुनावी माहौल में पूरी तरह रंग जाया करता था। प्रथम वर्षीय छात्र अपने कमरों में प्रचारकों के डेरा डल जाने से परेशान रहते, तो द्वितीय वर्षीय अपने कैम्प की के विरुद्ध चल रही बातें सुनने के लिए कान खड़े रखते। लगभग पूरा कैम्पस इन चुनावों में भाग ले रहा होता था। इस बात पर फिर भी बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है कि कौन कैसा काम करेगा, पर इस बार इस तरह के नज़ारे देखने को नहीं मिल रहे। किसी विरोधी के न होने से दोनों उम्मीदवारों ने अपनी जीत लगभग तय मान-सी ली है। नोटा तो खैर अपना प्रचार नहीं कर सकता।

इस बार के चुनावों में वह रोचकता नहीं है। एक बिट्सियन के जीवन में मनोरंजन के कम ही मौके आते हैं और छात्र संघ के चुनाव ऐसे ही मनोरंजन का स्रोत हुआ करता था। इस बार यह कई और चीजों की तरह बस एक नीरस औपचारिकता बनकर रह गया है, परन्तु अभी भी नोटा मैदान में बचा है। हम देख रहे हैं, आप भी देखते रहिए।



ऑडी-डिबेट

चुनाव लोकतन्त्र का आधार स्तम्भ हैं, जाहिर हैं निर्माण और विकास भी काफी हद तक इसपर ही निर्भर हैं। बिट्स चुनावों को अन्य चुनावों से पृथक बनाती 'ऑडी डिबेट' का इंतज़ार ना जाने कितने बिटसियन्स करते हैं। हालांकि प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं किन्तु यहाँ प्रश्न सूर्य को दीपक दिखाने का नहीं, उम्मीदवारों की दूरदर्शिता का, लिहाज़ा बिटसियन्स विकास में समझौते के लिए तैयार नहीं।



इस वर्ष प्रत्याशियों के सामने ई.सी. पैनल के तीखे सवाल तो थे किन्तु प्रतिद्वंदी के अभाव के

कारण अपने पक्ष को पूर्णतः प्रस्तुत करने का अवसर भी था। जहां तक नोटा के दबाव का विषय था, एक ओर अध्यक्ष पद के उम्मीदवार भारतरत्न पुलि का मानना था कि उनकी तैयारियां विध्यार्थियों के हित के लिए होती हैं, ना कि प्रतिद्वंदी पर कटाक्ष के लिए, वहीं जनरल सेक्रेटरी प्रत्याशी शिवम जिंदल कहते हैं कि चुनाव गुड व बेड में हैं बेटर में नहीं।

कार्यक्रम में भारतरत्न पुलि अपने कई विचार जैसे 'केम्पस मे शेड्स और बेंचेस', 'सहकार्य स्थान'(कई सुविधाओं के साथ), 'नियमित आवागमन यात्रा सेवा' (शुल्क – 60 रुपए), 'फूडकिंग को बेहतर बनाना' और उनके सफल होने के सटीक प्रमाण देकर दर्शकों व ई.सी. पैनल को विश्वास दिलाने में सक्षम रहे। हालांकि उनके 'कैब बुकिंग' व 'सेफ' नाम की योजनाओं पर ई.सी. पैनल के ठोस सवालों का उनके पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं था।

साथ में शिवम जिंदल अपने 'कलत्रल और टेक्निकल फंड्स' व 'पुस्तकालय में वाई-फाई' उपलब्ध करवाने के विचार को सक्षम सिद्ध करने में पूर्णतः सफल नहीं हो सके। साथ ही पैनल के अनुसार प्रत्याशी के एलटीसी व SAC में 'स्नेक वेंडिंग मशीन' की कोई खास आवश्यकता नहीं थी। उन्हें अपने 'लेट्स इनटर्न' व 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' के ख्याल को पैनल व दर्शकों तक पहुँचाने के लिए थोड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। इसके विपरीत उनके बिटसियन्स को प्लेसमेंट डाटा प्रदान करने के कदम को उनके समर्थकों व अन्य दर्शकों से काफी सरहाना मिली। कहीं न कहीं उनके जवाबों में दूरदर्शिता का अभाव साफ नज़र आ रहा था।

इस बार संभावना थी कि दोनों पद के एक-एक ही उम्मीदवार होने के कारण माहौल पेचीदा नहीं होगा किन्तु हमारे सख्त पैनल के सदस्यों के रहते ऐसा कहाँ संभव था। दोनों पद के प्रत्याशियों के कुछ ख्याल जैसे हबीब हैयर सलोन और ग्रीवेंस रेड्रेसल सिस्टम काफी मेल खाते थे किन्तु इनके सफल होने का आश्वासन देने के लिए भी उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी।

भले ही इस वर्ष यह प्रक्रिया थोड़ी अलग थी किन्तु इसमें भी उम्मीदवारों के अथक प्रयास, पैनल के सटीक प्रश्न, समर्थकों की ज़ोरदार तालियाँ व दर्शकों के प्रोत्साहन की कोई कमी नहीं थी।

कार्यक्रम हमेशा की तरह मनोरंजक व जानकारीपूर्ण था। बिट्स चुनाव की यही पृथक प्रक्रिया, साक्ष्य, दूरदर्शिता व विश्वास की महत्ता को सजग करती हैं।

शिवम जिंदल

आगामी छात्रसंघ चुनाव में जनरल सेक्रेटरी पद के उम्मीदवार शिवम जिंदल को उन कार्यों में खास रूचि है जिनसे समाज में कुछ सकारात्मक बदलाव आएँ। अपने स्कूल के दिनों से ही नियमित रूप से खेल और N.C.C. में सक्रिय रहने वाले शिवम ने बिट्स आकर FS BAJA और ASME में भी अपना योगदान दिया है। हिंदी प्रेस क्लब से उनके घोषणापत्र के सन्दर्भ में हुई बातचीत के कुछ मुख्य बिंदु प्रस्तुत है।

प्र. शिवम आपने SU पोर्टल के पुनरुत्थान का मुद्दा प्रमुखता से उठाया है। इस प्रक्रिया के तहत आप कौनसे बदलाव लाने की योजना रखते हैं?

उ. यह मुद्दा पहले भी कई बार उठाया गया है, पर चुनाव के बाद इसे ज्यादातर नज़रंदाज़ किया जाता है। सबसे पहले SU की टेक्निकल टीम का गठन किया जाएगा। इसके लिए संबन्धित अधिकारियों से बात की जा चुकी है।

प्र. अपने घोषणापत्र में आपने LET'S INTERN के माध्यम से छात्रों को इंटरशिप देने की बात की है। इसे ज़रा विस्तार से बताएँ।

उ. भारत सरकार ने इंजीनियरिंग छात्रों के लिए तीन इंटरशिप करना अनिवार्य कर दिया है। इसके तहत प्रथम वर्षीय छात्रों को अपनी प्रोफाइल एसयू के पास जमा करनी होगी जिसे LET'S INTERN के पास भेजा जाएगा।

प्र. कल्चरल और तकनीकी टीमों को प्रोत्साहित करने के लिए आप क्या कदम उठाएँगे?

उ. सबसे पहले तकनीकी टीमों के लिए एक क्राउड फंडिंग प्लेटफार्म की स्थापना की जायेगी, ताकि उन्हें अपने प्रोजेक्ट्स के लिए भूतपूर्व छात्रों से मदद मिलती रहे। इस क्राउड फंडिंग को सीधे तकनीकी टीमों के SWD अकाउंट से जोड़ा जाएगा।

प्र. आपके घोषणापत्र में आपने स्नैक वेंडिंग मशीन लगवाने का जिक्र किया है परंतु कैम्पस में पहले से ही खाने-पीने के लिए बहुत जगहें हैं, जैसे ANC, FK व रेडियाँ। इसके बावजूद आप स्नैक वेंडिंग मशीन लगाने पर ज़ोर क्यों दे रहे हैं?

उ. स्नैक वेंडिंग मशीन का मुख्य मकसद छात्रों को 24*7 स्नैक, कोल्डड्रिंक और एनर्जी ड्रिंक उपलब्ध कराना है। शुरुआत में LTC और SAC में एक-एक मशीन लगाई जाएगी। पेप्सिको ने इस करार में दिलचस्पी दिखाई है।

प्र. आपने घोषणापत्र में जावेद हबीब सलून खुलवाने की बात की है, यह मुद्दा पहले भी चुनावों में उठा है पर इसपर कभी भी काम नहीं हो पाया, आप क्या नया कर रहे हैं?

उ. जहाँ तक मुझे जानकारी है यह मुद्दा पहले के चुनावों में भी उठा था, पर सही जगह का चुनाव ना कर पाने के कारण बात आगे नहीं बढ़ सकी। अभी फिलहाल सलून के लिए ओल्ड SAC का चयन किया गया है और जावेद हबीब के ट्रांसपोर्टबल कंटेनर मॉडल पर भी विचार किया जा रहा है।



5

भारतरत्न पुलि

शटल बस

SAFE

छात्रसंघ अध्यक्ष पद के उम्मीदवार 'भारतरत्न पुलि' अपने घोषणापत्र पर चर्चा करने के लिए काफी तत्पर थे। पेश हैं हिंदी प्रेस क्लब की उनसे हुई वार्ता के कुछ

प्रमुख बिंदु -

SU पोर्टल

1. आप अध्यक्ष पद के लिए क्यों खड़े होना चाहते हैं तथा पूर्व में आपने छात्रसंघ के लिए क्या कार्य किए हैं?

SAFE

अपने प्रथम वर्ष में मैं SR भवन और द्वितीय वर्ष में बुद्ध भवन का छात्रावास प्रतिनिधि रह चुका हूँ। इन दो वर्षों में मैंने बहुत कुछ सीखा तथा मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ा। अध्यक्ष बनने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि अध्यक्ष छात्रसंघ का चेहरा होता है।

साइकिल

2. आपको शटल सर्विस के बारे में कैसे ख्याल आया और इसे एक हकीकत बनाने में आप किस तरह अग्रसर होंगे?

को-वर्किंग स्थल

PS छात्र दल

इसके लिए हमने संगम ट्रेवल्स से बात भी कर ली है। इसका प्रतिदिन का व्यय तीन हजार रुपए होगा। प्रातः 7:30 से शाम 5:30 बजे के बीच इसका परिवहन होगा। इसका एक तय

मार्ग होगा और इसका प्रयोग नवंबर, जनवरी एवं अप्रैल में होगा जब मौसम अपने चरम पर होता है। सभी बसें

बी.एस. 3 श्रेणी की होंगी जिससे वायु प्रदूषण पर भी लगाम कसी जा सकेगी। नब्बे दिनों का व्यय प्रतिछात्र मात्र साठ रुपए आएगा।

3. GSoC अध्याय को एक अलग क्लब बनाने की आवश्यकता क्यों है तथा क्या इसके लिए कोई चयन प्रक्रिया होगी?

GSoC परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले छात्रों की संख्या के आधार पर बिट्स पिलानी भारत में दूसरे स्थान पर आता है। मुझे विश्वास है कि यदि छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए एक विशिष्ट क्लब बना दिया जाएगा तो हम प्रथम स्थान पर आ जाएँगे। एक माह में दो बार होने वाले इन सत्रों में कोई भी छात्र अपनी रुचि अनुसार भाग ले सकेगा।

4. सहकार्य स्थान क्या है? हमारी संस्था को इसकी ज़रूरत क्यों है?

बिट्स में कई होनहार विद्यार्थी पढ़ाई के साथ ही अपने 'स्टार्ट-अप' पर भी कार्य करना शुरू कर देते हैं। उन्हें इसके लिए एक समर्पित स्थान उपलब्ध कराना ही इस बिंदु का मकसद है। इसके लिए एफ़. डी. 1 में एक कमरा भी तय कर लिया गया है।

5. आपने अपने घोषणापत्र में SAFE का जिक्र किया है। यह क्या है और इसे किस तरह प्रयोग में लाया जाएगा?

SAFE आईआईटी बॉम्बे की एक पहल है जिसके तहत परीक्षाओं को सरल एवं विस्तृत बनाने के लिए एक एप की सहायता से उन्हें ऑनलाइन लिया जाता है तथा तुरंत ही परिणाम भी जारी कर दिया जाता है। साथ ही कागज़ का प्रयोग भी कम होगा। हमारी तरफ से यह एक ग्रीन इनिशिएटिव भी है। आईआईटी बॉम्बे ने हमें आश्वासन दिया है इसे बिट्स में लागू करने में वे हमारा पूरा सहयोग करेंगे। इसके लिए हमने ए. आर. पी. से भी इजाजत ले ली है।



चुनाव आयोग

कवन श्रेथ – चुनाव आयोग



प्रश्न : चुनाव प्रक्रिया की आप संक्षिप्त में व्याख्या किस प्रकार करेंगे?

उत्तर : छात्र-संघ चुनाव संघ के अध्यक्ष, महासचिव, हॉस्टल-रिप्रेजेन्टेटिव आदि पदों के लिए आयोजित करवाए जाते हैं। अगस्त माह से शुरू होनी वाली इस प्रक्रिया में पहले सभी उम्मीदवारों को नामांकन करना होता है जो अमूमन 5-6 अगस्त तक समाप्त हो जाता है। नामांकन के पश्चात् उम्मीदवारों को अपने मेनिफेस्टो की जांच करवानी होती है जिसके पश्चात् ही वह प्रचार शुरू कर सकते हैं। प्रत्येक पद के लिए केवल एक-एक उम्मीदवार होने के कारण इस वर्ष के चुनाव में इंफो-सेमिनार आयोजित नहीं करवाया गया। 16 अगस्त को ऑडी-डिबेट का आयोजन करवाया गया था जिसमें चुनाव-आयोग द्वारा दोनों उम्मीदवारों के मेनिफेस्टो से सम्बंधित प्रश्न पूछे गए थे। अंत में 20 अगस्त को मतदान होगा जिसके पश्चात् मतों की गिनती व परिणाम घोषित किया जाएगा।

प्रश्न : प्रतिद्वंदी न होने के कारण इस वर्ष 'नोटा' की क्या अहमियत है?

उत्तर : 'नोटा' का अर्थ होता है, किसी भी उम्मीदवार को बहुमत प्राप्त न होना। प्रतिद्वंदी नहीं होने के कारण विद्यार्थियों का दूसरा विकल्प 'नोटा' होगा। ऐसा होने के कारण उम्मीदवार को अधिक प्रयास करने होंगे क्योंकि हमेशा की तरह वह प्रतिद्वंदी से बेहतर बनकर वोट हासिल नहीं कर पाएंगे। उन्हें अपनी क्षमता और उपलब्धियों के आधार पर वोट लेने होंगे, और बहुमत हासिल करना होगा अन्यथा दोबारा चुनाव होंगे और पुराने उम्मीदवार चुनाव में भाग नहीं ले पाएंगे।

प्रश्न : चुनाव आयोग प्रचार को लेकर किस प्रकार सख्ती अपनाता है तथा किस तरह के नियमों का पालन उम्मीदवारों को करना पड़ता है?

उत्तर : चुनाव में सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह होता है कि कोई भी उम्मीदवार अपनी काबिलियत और कार्यों के आधार पर जीत हासिल करे न कि प्रतिद्वंदी की निंदा कर के। जहाँ तक बाधाओं की बात है, तो प्रचार का एक समय निर्धारित किया गया है जिसके बाद यदि प्रचार किया जाए तो उम्मीदवार का नामांकन रद्द किया जा सकता है और यदि कोई प्रचार का गलत तरीका अपनाता है, तो उसके लिए भी यही प्रावधान है।

प्रश्न : प्रथम वर्षीय छात्र अक्सर ओवर-कैम्पेनिंग से परेशान रहते हैं, तो उसके लिए आपके द्वारा क्या प्रावधान किए गए हैं?

उत्तर : इस बार हमने इस बात का पूरा ध्यान रखा है। जैसे कि एस.आर. होस्टल में सिर्फ प्रथम वर्षीय छात्र हैं, तो प्रचार केवल रात्रि में 8:30-9:30 के बीच ही किया जा सकता है, वह भी सिर्फ कॉमन रूम में। सभी छात्रों को यह पता होना चाहिए कि अगर किसी समय वे व्यस्त हैं या वे पूरा मेनिफेस्टो जान चुके हैं, तो उन्हें प्रचार से अलग रहने का पूरा हक है।

प्रश्न : चुनाव पूर्ण रूप से निष्पक्ष हों, यह कैसे सुनिश्चित किया जाता है?

उत्तर : मतदान के दौरान किसी भी प्रकार का प्रचार नहीं किया जा सकता और मतदान के दौरान एक प्रोफेसर, चुनाव आयोग का एक सदस्य और एक सुपरिटेण्डेंट मौजूद रहते हैं। तीन लोगों की मौजूदगी यह सुनिश्चित करती है कि यदि कोई एक पक्षपात करना चाहे, तो अन्य दो की मौजूदगी ऐसा न होने दे। मतदान के समय मतदाता की पहचान की पुष्टि उसके आई.डी. कार्ड से की जाती है। गिनती के दौरान इन तीन लोगों के अलावा हर उम्मीदवार की तरफ से एक व्यक्ति मौजूद रहता है। यह सब बातें सुनिश्चित करती हैं कि चुनाव में कोई पक्षपात न हो।

प्रश्न : चुनाव में ई.वी.एम का प्रयोग क्यों नहीं किया जाता? आपको नहीं लगता कि इससे समय की भी बचत होगी?

उत्तर : हाँ, ई.वी.एम. से समय की बचत जरूर होगी। परंतु ई.वी.एम. के साथ सबसे बड़ी समस्या है उसको हैकिंग से सुरक्षा सुरक्षित रखना। ऐसा कई बार देखा गया है कि ई.वी.एम. के परिणामों पर लोगों ने सवाल खड़े किए हैं। यह मुख्य कारण है कि हम ई.वी.एम. का उपयोग नहीं करते।
6 किंतु हम ज्यादा से ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक होने का प्रयास कर रहे हैं, सभी जानकारियाँ और फॉर्म आदि इंटरनेट पर उपलब्ध कराए जाते हैं।



स्वतंत्रता दिवस



भारत विभिन्नता में एकता का देश है। यहाँ बहुत से धर्मों के लोग रहते हैं तथा बहुत से त्यौहार मनाते हैं। परन्तु स्वतंत्रता दिवस एक ऐसा दिन है जिसे पूरा देश एक साथ मिलकर एक त्यौहार के रूप में मनाता है। यह वही गौरवशाली दिन है जब असंख्य भारतीयों ने अपनी एकता और एकाग्रता का प्रदर्शन करते हुए गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर अंग्रेजों से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की थी। यह वही विशेष दिन है जब एक सोने की चिड़िया अपने पिंजरे से छूटकर इतिहास रचने निकली थी। इस कारण स्वतंत्रता दिवस देश के कोने-कोने में बड़ी धूम-

धाम से मनाया जाता है। यह हमें उन देशभक्तों की याद दिलाता है जो प्रत्येक भारतवासी की स्वतंत्रता पाने के लिए झेल रहे थे।

बिट्स में भी प्रत्येक वर्ष यह पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' से हुई। तत्पश्चात डायरेक्टर तथा वाइस चांसलर द्वारा तिरंगे को फहराया गया। इस खास घड़ी में अनिल राइ सर ने अपनी मण्डली के साथ 'एकला चलो बे', 'भारत देश है मेरा' जैसे देशभक्ति से पूर्ण गीतों का प्रदर्शन किया जिससे इस कार्यक्रम में चार चाँद लग गए। इसके बाद डा. सौविक भट्टाचार्य और डा. अशोक सरकार ने बताया कि उनके लिए स्वतंत्रता खास एहमियत रखती है और वे सभी क्रांतिकारियों के प्रयासों का सम्मान करते हैं। देश की स्वतंत्रता सिर्फ राष्ट्रीय आजादी नहीं बल्कि विचारों और मन की आजादी है। गाँधी जी ने भी इस बात को लेकर कहा था कि "किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता का मोल नहीं किया जा सकता, वह जीवन है, भला जीने का कोई मोल चुकाएगा!!!"

स्वतंत्रता दिवस हम सभी को याद दिलाता है कि हम एक महान देश के नागरिक हैं और हमें उसकी एकता को बनाए रखने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए। हम सभी जानते हैं कि स्वतंत्रता स्वतंत्र नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयास ने वर्षों ले लिए। किन्तु अब यह हमारा दायित्व बनता है कि हम इस स्वतंत्रता के सही मायनों को समझें। प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह नर हो या नारी, एक समान अधिकार मिले। उस समय के विपरीत आज हमें अपने देश को इसके भीतर ही मौजूद संकीर्ण मानसिकता, विभिन्न कुरीतियों तथा विभिन्न बुरी आदतों से बचाने की आवश्यकता है। इस सब के पश्चात ही यह सोने की चिड़िया आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँच सकेगी।

असमंजस-द्वितीय वर्ष का

यह समय है अगस्त अंत का, स्वाभाविक रूप से आप उम्मीद कर रहें होंगे कि, यह आया एक और लम्बा-चौड़ा लेख, फ्रेशर्स के लिए। कई लोगों ने बिना किसी मोह, लालच के फ्रेशर्स को संबोधित करते हुए पूरी पोथियाँ गहरी शब्दावली के साथ अपनी, और विभिन्न ग्रुप्स की फ़ेसबुक वॉल पर लिख डाली हैं, इसीलिए यह लेख संबोधित है नए द्वितीय वर्षीय छात्रों के लिए, जो कुछ 4 महीनों पहले तक इस कैम्पस के नन्हें मुन्ने थे।

फ्रेशर्स को शैतान प्रतीत होने वाले द्वितीय वर्ष के बैच की समस्याएँ सुलझाना अभी लोगों की प्राथमिकता सूची में काफी नीचे आता है। चाहे संस्थान प्रसाशन हो, या बिट्स पिलानी के 'निस्वार्थ समाजसेवी', सभी को राम-बुध (और इस वर्ष से माल-ए) के वासियों के जीवन से जुड़ी मुश्किलें अभी एस.आर. वासियों की मुश्किलों से थोड़ी कम गहरी लग रही है (कारण तो आप इस पत्रिका के विषय से समझ ही गए होंगे)। समस्याओं की सूची काफी लंबी और विविधता पूर्ण है, कुछ उदाहरण देते हैं – कमरों में वातानुकूलन की कमी, स्नानघरों के निर्बोधता पूर्ण निर्माण जैसे कई मुद्दे संस्थान स्तर की दिक्कतें हैं, जिनका निबटारा कठिन है। वाटरकूलर्स में पानी की कमी, कमरों में कीड़ों का निरंतर प्रकोप जैसे मुद्दे केवल संस्थान की नजरंदाजी का नतीजा है। पहले वर्ष में बिट्स कॉमप्री एप, लगातार आयोजित होने वाली छात्र-शिक्षक मुलाकातों जैसे लाड़-लड़ावन की कमी तय रूप से इस वर्ष खलेगी।

ज्यादातर समस्याएँ पहले वर्ष वाली ही हैं, और जो नई है, उनको एंक/एफ्रके से कम हुई दूरीयां प्रतिकारित कर देती हैं।

"कौनसा लैपटॉप पहले वर्ष में सही रहेगा", "पानी की सुविधा कैसी है कैम्पस में" जैसे सवालों से "कौनसा ह्यूएल लिया जाए", "25 यूनिट से ज्यादा नहीं ले सकते!?" जैसे सवालों तक, बिट्सैट ऋवैरीस पर ज्ञान मांगने से बांटने तक का सफर पूरा करने वाला बैच अब पूरे आत्मविश्वास के साथ द्वितीय वर्ष की चुनौतियों से लड़ने के लिए तैयार है।

HDC के बाद EC पर लगे रैगिंग के आरोप!!

हाल ही में कॉलेज के हिंदी ड्रामा क्लब, जो कि HDC के नाम से प्रसिद्ध है, को रैगिंग के आरोपों के चलते बैन कर दिया गया है। जैसा कि हर सनसनीखेज खबर के साथ होता है, यहाँ भी एक खबर की अनेक कहानियाँ सुनने को मिल रही हैं। एक तरफ़ कुछ छात्र रैगिंग की घटना को हिटलर के Concentration Camps के समकक्ष मानते हुए बैन को एक क्रांति बता रहे हैं। वहीं कुछ लोग यह उम्मीद लगा कर बैठे हैं कि आखिरकार अब लोगों को इंग्लिश ड्रामा क्लब के अस्तित्व के बारे में पता चलेगा।

हालांकि HDC के सदस्यों ने सभी आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए, हमारे सूत्रों को बताया कि शिकायत करने वाले छात्र ने ऐसा HDC की चयन प्रक्रिया में उसका चयन ना होने के कारण किया। वैसे चयनित ना होने वाले छात्रों ने फैसले का स्वागत ही किया है।

हालाँकि इस घटना के बाद से कॉलेज प्रशासन बेहद सतर्क है। कॉलेज प्रशासन की बैठक के बाद यह नतीजा निकला कि कॉलेज रैगिंग के चलते, और बदनामी नहीं सह सकता। इसलिए अब इस दिशा में और सख्त कदम उठाए जाने की योजना है। हमारे खास सूत्रों से पता चला है कि ऑडी रैग के नाम से मशहूर ऑडिटोरियम डिबेट पर बैन लगने की संभावना है। अक्सर स्वतंत्रता दिवस के ठीक बाद अपने तीखे अंदाज़ से प्रेसिडेंट, जनरल सेक्रेटरी के प्रत्याशियों को मानसिक प्रताड़ना देने वाला EC अब कॉलेज प्रशासन के रडार पर है। ऑडी रैग पर जल्द ही एक जाँच बिठाए जाने की संभावना है।

सीनियर-जूनियर 'interaction' के सम्बन्ध में भी कुछ कदम उठाए जा सकते हैं। फर्स्ट ईयर के छात्रों को सीनियर्स के 'एक्सप्लोर करो' जैसे शब्दों से बचाने के लिए अगले वर्ष से 'एक्सप्लोर' करने लायक जगहों की सूची जारी की जाएगी। सभी छात्रों से विनती है कि यदि रैगिंग को रोकने के लिए कोई भी और विचार आप देना चाहें तो हमें जरूर सूचित करें।

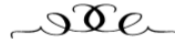
P. S. :- यह लेख केवल पाठकों के विनोद को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है। कृपया संवेदनशील लोग इसे हृदय से न लगाएं।

यदि आप भी हिंदी प्रेस परिवार के सदस्य बनने के इच्छुक हैं, तो संपर्क करें -

सुमेघ गर्ग - 7891778087

दीपेश शर्मा - 9636276186

हिंदी प्रेस परिवार



प्रियंक

तुषार, सलिल, शिवांगी, अभिनव

सुमेघ, कुल्लू, अनिमेष, प्राची, अंजू, श्रद्धा, जाह्नवी, दीपेश, निखिल, मितुल, आशुतोष

निपुण, अभिनव, निमिषा, अक्षिता, कुशल, राहुल, तन्मय

व्योम, प्रत्यूष, कृति, अमोल, पार्थ, प्रखर, अतीक्षा, ऋतिक

